प्रकाशन तिथि : 15 मार्च, 2020
प्रेषण तिथि : 19 मार्च, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 01 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

आलोक आश्रम में दम्पती शिविर संपन्न

बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में श्री क्षत्रिय युवक संघ का दम्पती शिविर 07 से 10 मार्च तक माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में आयोजित हुआ। शिविर में राजस्थान व गुजरात के विभिन्न प्रांतों से 24 जोड़ो ने भाग लिया। दम्पती परिवार रूपी व्यवस्था की धुरी होते हैं, उनका पारस्परिक व्यवहार कैसा हो, परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति उनका क्या दायित्व है, समाज और संस्कृति की मर्यादाओं और परंपराओं के निर्वहन में उनकी क्या भूमिका है, संतति के जीवन निर्माण हेतु उनके प्रयत्न क्या हों, यह सभी शिक्षण विभिन्न गतिविधियों व प्रवचनों के माध्यम से दिया गया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

'अंकुरण में सहायक है दम्पती शिविर'

स्वागत उद्बोधन का संपादित अंश...

संघ के शिविर में जो शिक्षण होता है वह बीज का डालना तो अवश्य है परन्तु वह अंकुरित नहीं होता है और यदि अंकुरित होता है तो बाहरी परिस्थितियों से नष्ट हो जाता है क्योंकि परिवार में समाज में इस शिक्षण के अनुकूल परिस्थितियां नहीं है। इन परिस्थितियों के निर्माण के उद्देश्य से ही दम्पती शिविरों का प्रारंभ हुआ। दम्पती शिविर अर्थात पति पत्नी का एक साथ शिविर में आना, संघ में 1990 के बाद प्रारम्भ हुआ। छोटे-छोटे तीर्थस्थलों पर छोटे-छोटे शिविर लगे। इन आयोजनों की सफलता से सभी का उत्साह बढ़ा।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'संघ सिखाता है हमें क्या चाहिए'

विदाई संदेश का संपादित अंश...

श्री क्षत्रिय युवक संघ रूपी परिवार में हम यहाँ फाग खेलने आए थे। जब ये शिविर तय हुआ तो कई लोगों ने कहा होली पर कौन आएगा? मैं उनकी बातें सुनता रहा। संघ के लिए कोई होली भी छोड़ सकता है यह बात जो नहीं जानते हैं उन्हीं को शंका हुई। मुझे कोई शंका नहीं थी। कुछ कम लोग आ सकते हैं पर आप आएंगे ऐसा विश्वास था। आप आये और आपने यहां होली भी खेली। यहाँ की होली और बाहर की होली के अंतर को आपने अनुभव किया होगा। जो इस शिविर में सम्मिलित हुए हैं उनके ये चार दिन स्मरणीय रहेंगे।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

हमारे पथप्रेरक का 24वें वर्ष में प्रवेश

4 मार्च 2020 के अंक के साथ हमारा पथप्रेरक 23 वर्ष का हो गया है और अब इस अंक के साथ 24वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। दूरगामी लक्ष्यों को लेकर होने वाले इस प्रकार के प्रयासों में वर्षों के पायदान महत्व नहीं रखते क्यों कि समाज की शक्ति को दिशा देने के प्रयास सदियों के अनवरत प्रयासों से फलीभूत होते हैं लेकिन एक सामाजिक सामाचार पत्र के रूप में 23 वर्ष की निर्बाध यात्रा इस युग में महत्वपूर्ण है जब रोज नए समाचार पत्र बनते और बिगड़ते रहते हैं। पथप्रेरक की इस निर्बाध यात्रा का आधार पूज्य तनसिंह जी के मानस पुत्र श्री क्षत्रिय युवक संघ की निरन्तर और नियमित चलने वाली साधना है। पथप्रेरक उस साधना के प्रति नमनशील रहते हुए परमेश्वर से इस कृपा को सदैव बनाए रखने की प्रार्थना करता है। साथ ही अपने अभिभावक श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षण एवं स्नेह की विनयपूर्वक अपेक्षा करता है।

वयोवृद्ध स्वयंसेवक फतेहसिंह थोब का देहावसान

संघ के वरिष्ठ एवं वयोवृद्ध स्वयंसेवक फतेहसिंह जी थोब का 9 मार्च को देहावसान हो गया। 10 मई 1932 को जन्में फतेहसिंह जी ने अपने जीवन काल में 9 उ.प्र.शि., 13 मा.प्र.शि., 11 प्रा.प्र.शि. व 1 विशेष शिविर किया। जीवन के प्रारंभिक समय में अति सक्रिय रहते हुए उन्होंने संघ की नियमित शाखा के माध्यम से अनेक स्वयंसेवकों को संघ से जोड़ा।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

'विशिष्ट को सामान्य व्यवहार का अधिकार नहीं'

कार्ययोजना बैठक गुजरात

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि एक बार जो अन्यों के लिए सम्मानीय बन जाता है, विशिष्ट बन जाता है, उसे सामान्य व्यक्तियों की भांति व्यवहार करने का अधिकार नहीं रह जाता। श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक के रूप में हम भी विशिष्ट हैं, असाधारण हैं इसीलिए हमें भी संसार के सामान्य लोगों की भांति व्यवहार करने का अधिकार नहीं है। पहले हमने संघ को स्वीकार किया, फिर संघ ने हमको स्वीकार किया। इस स्वीकृति से हम विशिष्ट बन गए क्योंकि श्री क्षत्रिय युवक संघ स्वयं में असाधारण है। इस कालखंड में जो साधना संघ द्वारा की जा रही है वह केवल संघ ही करने में सक्षम है इस बात को संघ से इतर अनेकों व्यक्तियों ने, संस्थाओं ने स्वीकार किया है। इसीलिए आप इस बात को जान लें कि आप श्रेष्ठ है और आपके आचरण पर संसार की दृष्टि है। आप यदि गलत आचरण करते हैं तो उसका दाग संघ पर लगता है इसलिए अपने उत्तरदायित्व को समझें। उपरोक्त बातें वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय अजीत सिंह धोलेरा ने 01 मार्च 2020 को सुरेन्द्रनगर (गुजरात) स्थित संघ कार्यालय शक्तिधाम में आयोजित कार्ययोजना बैठक के दौरान कही।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

प्रथम शिविर के स्वयंसेवक सबलसिंह रामपुरा का देहावसान

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक सबलसिंह रामपुरा (चुरू) का 7 मार्च को देहावसान हो गया। उन्होंने अपने जीवन में 11 शिविर किए एवं बीकानेर क्षेत्र में संघ कार्य को प्रारम्भ करने में महत्वपूर्ण योग दिया। वे 22 दिसम्बर 1946 को संघ की स्थापना के तुरन्त बाद आयोजित शिविर में शामिल होने वाले 19 स्वयंसेवकों में शामिल थे एवं बीकानेर में लगे प्रथम उच्च प्रशिक्षण शिविर में भी शामिल थे।

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में सांसदों एवं विधायकों को उनकी जीवन निर्वाह की समस्या की चिंता से मुक्त रहने के लिए पर्याप्त सुविधाएं एवं साधन सरकार द्वारा उपलब्ध करवाई जाती है। ऐसा इसी व्यवस्था में होता हैं ऐसा नहीं है बल्कि हर शासन प्रणाली में शासन करने वाले लोगों के जीवन निर्वाह का दायित्व राज्य लेता है ताकि वे अपना सम्पूर्ण समय एवं ऊर्जा राज्य के प्रति अपने उत्तरदायित्वों के भली प्रकार निर्वाह में खर्च कर सकें। इसी व्यवस्था के तहत भारत में सांसदों, विधायकों को पर्याप्त वेतन, भत्ते, आवास आदि की सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। पूज्य तनसिंह जी ने 1948 में वकालात प्रारम्भ की। अभी कार्य का प्रारम्भ ही था कि उन्हें बाड़मेर नगर पालिका का अध्यक्ष चुन लिया गया। उन्होंने अपनी वकालात का काम अपने सहयोगी को सौंप दिया और स्वयं नगरपालिका के अध्यक्ष के नाते मिलने वाले वेतन से अपना, अपने परिवार का एवं अपने पर निर्भर साथियों का निर्वाह करने लगे। 1952 व 1957 में विधायक तथा 1962 में सांसद बने तो भी विधायक एवं सांसद के रूप में मिलने वाले वेतन से ही निर्वाह करने लगे, इसके अतिरिक्त किसी प्रकार का व्यवसाय नहीं किया। 1967 में सांसद का चुनाव हार गए तो आजीविका का प्रश्न खड़ा हुआ। हमारे लिए यहां यह विचारणीय है कि एक बार नगरपालिका अध्यक्ष, दो बार विधायक एवं एक बार सांसद रह चुकने के बाद भी उनके सामने आजीविका का प्रश्न खड़ा हुआ। तब उन्होंने कृषि, व्यवसाय आदि के लिए प्रयास प्रारम्भ किए। धीरे-धीरे व्यवसाय जम गया एवं स्वयं की तथा स्वयं पर निर्भर साथियों की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति जितनी कमाई होने लगी। 1972 में सांसद का चुनाव नहीं लड़ा और 1977 में जब तीसरी बार सांसद का चुनाव लड़ा तब तक व्यवसाय का सम्पूर्ण भार अपने साथियों पर छोड़कर लगभग निवृत हो चुके थे। यह तो था पूज्य तनसिंह जी का राजनीतिक जीवन और अब हम आजकल के सांसदों, विधायकों के जीवन पर नजर डाले। क्या वे अपनी आवश्यकताओं को स्वयं को मिलने वाले वेतन भत्तों तक सीमित रख पाते है? क्या आवश्यकताएं पूरी होने के बाद भी उनकी कमाई की भूख शांत हो पाती है? क्या वे अपने जन प्रतिनिधित्व काल में पीढियों का प्रबंध करने के लिए लालायित नहीं होते? जरा विचार करें जो सरकार द्वारा उच्च कोटि की सुविधाएं एवं साधन मिलने पर संतुष्ट नहीं होते वे शासन में अपनी भूमिका के प्रति किस प्रकार ईमानदार रह सकते है। ऐसे में पूज्य श्री का जीवन हमारे सामने आदर्श स्थापित करता है।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

JEE MAIN

JEE MAIN परीक्षा का पूरा नाम संयुक्त प्रवेश परीक्षा - मुख्य (जॉइंट एंट्रेंस एग्जाम - मेन) है। देशभर के 31 NITs (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी), 23 IITs (इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी) तथा 23 CFTIs (सेंट्रली फंडेड टेक्निकल इंस्टिट्यूट) तथा अन्य तकनीकी संस्थानों में स्नातक स्तरीय इंजीनियरिंग कोर्सेज में प्रवेश प्रदान करने हेतु इस परीक्षा का आयोजन किया जाता है। JEE MAIN परीक्षा क्वालीफाई करने वाले अभ्यर्थी ही JEE ADVANCED की परीक्षा देने हेतु पात्र होते हैं जिसके द्वारा प्रतिष्ठित IIT संस्थानों में प्रवेश मिलता है। इसके लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता बारहवीं कक्षा अथवा समकक्ष उत्तीर्ण होना है। बारहवीं की परीक्षा में बैठ रहे विद्यार्थी भी यह परीक्षा दे सकते हैं। इस परीक्षा में बैठने हेतु कोई आयु सीमा निर्धारित नहीं की गई है। NEET UG की भांति इस परीक्षा का आयोजन भी नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा किया जाता है। यह परीक्षा वर्ष में दो बार आयोजित होती है। अप्रैल 2020 में आयोजित होने वाली परीक्षा हेतु 2018 तथा 2019 में 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने वाले अथवा 2020 में बारहवीं की परीक्षा देने वाले अभ्यर्थी ही आवेदन कर सकते हैं। आवेदन ऑनलाइन करना होगा। परीक्षा अंग्रेजी, हिंदी तथा गुजराती माध्यम में आयोजित होगी। अभ्यर्थी को आवेदन के समय ही परीक्षा का माध्यम चुनना होता है। इस बार परीक्षा में तीन प्रश्नपत्र होंगे-

(a) बी. ई./ बी. टेक कोर्स में प्रवेश हेतु।

(b) बी. आर्क में प्रवेश हेतु। (तीन भाग- गणित, अभिरुचि परीक्षा तथा ड्राइंग परीक्षा)

(c) बी. प्लानिंग में प्रवेश हेतु। (तीन भाग- गणित, अभिरुचि परीक्षा तथा प्लानिंग आधारित भाग)

इनमें ड्राइंग परीक्षा के अतिरिक्त सभी भागों की परीक्षा कंप्यूटर आधारित अर्थात ऑनलाइन तरीके से होगी।

परीक्षा पैटर्न की विस्तृत जानकारी तथा अन्य सूचनाएं jeemain.nta.nic.in पर जाकर प्राप्त की जा सकती है।

क्रमशः...

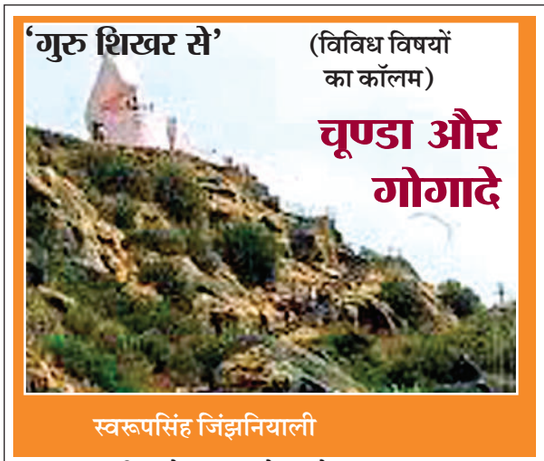

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

मालाणी (खेड़, बाड़मेर) के शासक मल्लीनाथ जी के छोटे भाई वीरमजी ने सेतरावा (शेरगढ़) में अपना मुकाम बनाया। वीरमजी के वंशजों की जोधपुर, बीकानेर व किशनगढ़ रियासतें राजस्थान में हैं तथा कुछ ने मालवा एवं गुजरात में राज्य स्थापित किए। वीरम जी के पांच पुत्र थे। देवराज, चूण्डा जैतसिं, विजा और गोगादेव। वीरमदेव जी जोहियावटी में जोहिया राजपूतों से युद्ध में काम आ गए। रावल मल्लीनाथ जी ने अपने भतीजों का ख्याल रखा। देवराज तो सेतरावा के शासक ही रहे और चूण्डा ने इंदों से मण्डोर का शासन ले लिया। चूण्डा के पोत्र व रणमल के पुत्र राव जोधा ने जोधपुर बसाया। जब राव वीरम की मृत्यु हुई तब चूण्डा मात्र 6 वर्ष के थे और लगभग 7 वर्ष तक ये अपनी माता की इच्छानुसार गुप्त रूप से कलाऊ (शेरगढ़ परगने का एक गांव) में अल्हा जी चारण की देखभाल में रहे थे। बाद में मल्लीनाथ जी इन्हें अपने पास ले गए। लगभग 1334 ई. में चूण्डा जी ने मण्डोर पर अपना आधिपत्य जमा लिया। एक बार कलाऊ के चारण आल्हा जी मण्डोर गए एवं अपने द्वारा की गई सेवा की याद दिलाते हुए एक दोहा कहा -

चूण्डा नावै चीत, काचर कलाऊ तणा।
भूप भयो है भींत, मण्डोवर रे मालियै।।

अर्थात है चूण्डा जो इस समय आपको कलाऊ के काचरों की याद थौड़ी ही आती होगी क्योंकि इस समय आप मण्डोर के महलों में राजा बनकर पत्थरों की दीवार बन बैठे हो। यह सुन चुण्डा जी ने चारण आल्हा जी को अपने पास बुलाया एवं उन्हें दान व मान देकर विदा किया।

रावल वीरम जी के सबसे छोटे पुत्र गोगादे थे। ये बड़े ही वीर पुरुष थे। इनके वंशज शेरगढ़ परगने के गांव केतू, खिरजां तेना, भूंगरा आदि में निवासरत हैं तथा गोगादेव राठौड़ कहलाते हैं।

गोगादेव जी ने अपने पिता वीरम जी की हत्या का बदला लेने के लिए जोहिया राजपूतों पर आक्रमण किया। उस दौरान ही रात्रि में उन्होंने अपने घोड़ों को चरने के लिए जंगल में छोड़ दिया। उधर उनके शत्रु धीरदेव जोहिया एवं उसके ससुर पूगल के भाटी राणगदेव ने मौका पाकर गोगादेव के जंगल में चर रहे घोड़ों को दूर भगाकर आक्रमण कर दिया।

गोगादेव ने बिना घोड़ों के ही युद्ध में अपने शत्रुओं का वीरता से सामना किया परन्तु अपनी दोनों जांघों के कट जाने से वो गिर गए। घोड़े पास थे नहीं। परन्तु गोगादेव ने इस घायल अवस्था में भी उछल कर के एक ही वार से तलवार से धीरदेव जोहिया के दो टुकड़े कर दिए। इस तरह शत्रु से बदला लेकर गोगादेव जी का शरी अधिक रक्त श्राव के कारण शान्त हो गया और मरते समय अपने साथियों से कहा कि जोहियो से तो बदला मैंने अपने आप ही ले लिया परन्तु भाटियों से बदला लेना बाकी है जो मेरे वंश का कोई सपूत अवश्य लेगा। यह घटना ई. 1403 की है। इस युद्ध की घटना पर कवि ने कहा है -

भूखा तिसिया थाकड़ा, राखिजे नैडाह।
ढलिया हाथ न आवसी, गोगादे घौड़ाह।।

अर्थात विपति के समय भूखे प्यासे अथवा धके हुए घोड़ों को अपने पास ही रखना चाहिए। दूर जाने पर गोगादेव तुम्हारे घोड़े हाथ नहीं आएंगे।

(पृष्ठ एक का शेष)

आलोक... प्रतिदिन यज्ञ किया गया जिसमें पति-पत्नी द्वारा एक साथ परमेश्वर की उपासना करते हुए धर्म को जीवन का आधार बनाने की प्रार्थना की गई। विभिन्न खेलों के माध्यम से उस अहं को गलाने का प्रयास हुआ जो पति-पत्नी और अन्य पारिवारिक सम्बन्धों में दरार पैदा करता है। होली के दिन होलिका दहन का कार्यक्रम हुआ जिसमें सामूहिक रूप से सहगीत गए गए तथा अपने जीवन से बुराइयों को, विकृतियों को जलाने की ईश्वर से प्रार्थना की गई। धुलण्डी के दिन माननीय संघप्रमुख श्री के निर्देशन में पति-पत्नी द्वारा एक दूसरे को गुलाल लगाकर होली खेली गई। पूरा शिविर पारिवारिक भाव से ओत-प्रोत रहा।

वयोवृद्ध.... चौपासनी आंदोलन में इस शाखा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे उन लोगों में शामिल थे जिनको पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तर 'पंछी की राम कहानी' में धाय मां से संबोधित किया है। 1949 से 1990 तक चौपासनी में शिक्षक के रूप में कार्यरत फतेहसिंह जी ने अफीम मुक्ति आंदोलन में भी महत्वपूर्ण काम किया। विगत लंबे समय से वे अस्वस्थ चल रहे थे।

जालोर संभाग की प्रांतीय बैठकें

जालोर संभाग के विभिन्न प्रांतों की प्रांतीय बैठकें 7 व 8 मार्च को आयोजित हुईं। भीनमाल व सांचौर प्रांत की बैठक सुरावा में स्वयंसेवक तनसिंह सुरावा के आवास पर 7 मार्च की रात्रि में आयोजित हुई। संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी के नेतृत्व में आयोजित इस बैठक में सांचौर प्रांत के प्रांत प्रमुख महेन्द्रसिंह कारोला व भीनमाल प्रांत प्रमुख नाहरसिंह जाखड़ी सहित 30 स्वयंसेवक उपस्थित रहे। 8 मार्च को सिरोही प्रांत की बैठक वरिष्ठ स्वयंसेवक ईश्वरसिंह रामसर के रेवदर स्थित आवास पर रखी गई जिसमें प्रांत प्रमुख सुमेरसिंह उथमण सहित प्रांत के दायित्वाधीन स्वयंसेवक उपस्थित रहे। दोनों बैठकों में संभाग प्रमुख ने तीनों प्रांतों के संघ कार्य की समीक्षा की। आगामी मई माह में अहमदाबाद में आयोजित होने वाले 11 दिवसीय ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर को लेकर चर्चा की गई। शिविर के लिए पात्र स्वयंसेवकों की सूची पर चर्चा की गई एवं उनसे सम्पर्क करने का दायित्व बांटा गया। तीनों प्रांतों में लगने वाली शाखाओं को लेकर विचार विमर्श किया गया। संघ की मासिक पत्रिका संघ शक्ति व पाक्षिक समाचार पत्र पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता के लक्ष्यों की समीक्षा की गई एवं आगामी लक्ष्य लिए गए।

महिला शाखा ने मनाया फागोत्सव

संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में लगने वाली महिला शाखा ने 3 मार्च को फागोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में सभी को इस उत्सव की बधाई दी गई एवं संदेश दिया गया कि सभी के जीवन में ऐसे ही खुशी के रंग घुले रहे। आनंद एवं उत्साह के प्रदाता संघ कार्य को जीवन में सदैव जारी रखें। साथ ही सभी ने यह निर्णय किया कि प्रति माह एक दिन किसी एक के घर अलग-अलग शाखा लगाई जाए ताकि उस घर के पड़ौस में रहने वाली महिलाओं एवं बालिकाओं को शाखा से जोड़ा जा सकें एवं संघ की विचारधारा को घर-घर में पहुंचाया जा सके।

उदयपुर में होली स्नेहमिलन

उदयपुर में रहने वाले स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों ने 8 मार्च को उदयपुर के निकट स्थित झामेश्वर महादेव (झामर कोटड़ा) उदयपुर में होली स्नेहमिलन एवं स्नेहभोज का आयोजन किया। सांघिक परम्परानुसार आयोजित कार्यक्रम में झामेश्वर महादेव एवं मां कालिका मंदिर में दर्शनोपरांत विचार विनिमय का कार्यक्रम रखा गया। अलग-अलग विषयों पर पर्चियां डाली गई एवं जिसके जो पर्ची निकली उस पर संबंधित व्यक्ति ने अपने विचार रखे। सुरेन्द्रसिंह पोछीना ने परिवार की पसंद पर विवाह, मीनाक्षी कंवर बेमला ने अतिथि सत्कार, गजेन्द्रसिंह गोदेला ने शूटिंग में कैरियर, भानसा झिलवाड़ा ने सामाजिक भाव, डॉ. कमलसिंह ने अपनापन, रघुवीरसिंह बिखरणिया ने समाज कार्य में सहयोग आदि विषयों पर विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन भंवरसिंह बेमला व बृजराजसिंह खारड़ा ने किया। कुरीतियों को मिटाने में सहयोग व संघ साहित्य पर भी चर्चा की गई। विचार विनिमय के पश्चात सहगायनों पर झूमने का दौर चला। स्नेहभोज की व्यवस्था चन्द्रभान सिंह तलावदा द्वारा की गई।

बावड़ी में होली स्नेहमिलन

रायसल मंच खंडेला एवं जमुवाय फाउंडेशन बावड़ी के तत्वावधान में चोमू के निकट बावड़ी में होली स्नेहमिलन रखा गया। इस स्नेहमिलन में पलसाना सरपंच रूपसिंह, केरपुरा सरपंच भंवरसिंह, लढ़ाणा के उपसरपंच बजरंगसिंह, चोमू पुरोहितान के उप सरपंच गोकुलसिंह, राष्ट्रीय स्तर पर चयनित निशानेबाज दीपेन्द्रसिंह पलसाना, राजस्थान महिला क्रिकेट टीम में चयनित डिम्पल शेखावत, चिकित्सक के रूप में चयनित भवानीसिंह, विद्युत विभाग में चयनित जितेन्द्रसिंह का सम्मान किया गया। समारोह में भाजयुमो के प्रदेश मंत्री देवायुष सिंह शाहपुरा, मांधाता सिंह आदि ने महाराव शेखा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व, महिला शिक्षा, आपसी समन्वय आदि विषयों पर अपनी बात कही। श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के संयोजक यशवर्धनसिंह झेरली ने फाउंडेशन की स्थापना, उद्देश्य, करणीय कार्यों एवं कार्यप्रणाली की जानकारी दी।

मुंबई व सूरत में होली स्नेहमिलन

होली के अवसर पर मुंबई एवं सूरत की शाखाओं ने होली स्नेहमिलन का आयोजन किया। सूरत के सारोली के वीर अभिमन्यु पार्क में आयोजित स्नेहमिलन में प्रद्युम्न सिंह वाग्धारा ने संघ के बारे में जानकारी दी। वहीं बाबूसिंह रेवाड़ा ने 'लग्न की परीक्षा' अवतरण का पठन किया। भवानीसिंह माडपुरिया व अजीतसिंह कुकणवाली ने भी चर्चा में भाग लिया। अंत में सभी स्वयंसेवकों ने एक-दूसरे को गुलाल लगाकर रंगोत्सव मनाया। संचालन दिलीपसिंह गड़ा ने किया। मुंबई की सभी शाखाओं ने धुलंडी के अवसर को अधिकतम संख्या दिवस के रूप में मनाया। गिरगांव चौपाटी की तनेराज शाखा के स्वयंसेवकों ने सभी के गुलाल लगाकर मुंह मीठा करवाया एवं एक-दूसरे को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर भारत पर्यटन के लिए आए रुसी पर्यटक दल के सदस्यों ने स्वयंसेवकों के संघ होली खेली एवं भारतीय संस्कृति की अलबेली परम्पराओं से परिचित हुए। इसी प्रकार मुंबई की कल्याण शाखा, नेरूल शाखा, मलाड़ शाखा, भायंदर शाखा आदि शाखाओं ने भी रंगोत्सव मनाया।

संपादकीय

आत्महीनता मुक्त आत्मावलोकन

आत्मावलोकन का अर्थ अपने आपका अवलोकन करना होता है। जब ईमानदारी से व्यक्ति अपने आपका अवलोकन करता है तो उसे अपनी कमियों एवं अच्छाईयों का भान होता है। वैसे जहां ईमानदारी की बात आएगी और उसके साथ आत्मावलोकन शब्द जुड़ जाता है तो संकेत अपनी कमियों को देखना ही होता है। अच्छाई को तो व्यक्ति को प्रयासपूर्वक देखने की जरूरत ही नहीं होती। प्रायः संसार ही आपकी अच्छाई को बता देता है या व्यक्ति स्वयं ही अपनी अच्छाई को प्रकट करने में इतना अधिक उतावला होता है कि स्वयं में उनका दर्शन तो बिना प्रयास के ही कर लेता है। इस प्रकार सामान्यतया जब हम ईमानदारी पूर्वक आत्मावलोकन की बात कर रहे होते हैं तो इसका अर्थ अपनी कमियों को देखना ही होता है। हालांकि कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में अपनी अच्छाई को जानने में भी आत्मावलोकन करना पड़ता है। जब सामान्य परिस्थितियों में सामान्य व्यक्ति ईमानदारी पूर्वक आत्मावलोकन की क्षमता अर्जित कर आत्मावलोकन करता है तो उसे स्वयं की कमियां ही नजर आती हैं। जब आत्मावलोकन में इस प्रकार स्वयं की कमियों को देखता है तो स्वयं को अन्यों से कमतर पाकर व्यक्ति हीन भाव का भी शिकार होता ही है। इस प्रकार आत्मावलोकन आत्महीनता की ओर अग्रसर करने वाला हो जाता है। ऐसे में जो आत्मावलोकन व्यक्ति को आगे बढ़ान में सहायक होना चाहिए था वह बाधक बन जाता है। आत्महीनता का अधिक्य व्यक्ति को एक सीमा के बाद आत्महंता बनने की ओर अग्रसर करने वाला हो जाता है। इस प्रकार आत्मावलोकन एक गुण से अवगुण की श्रेणी में प्रविष्ट हो जाता है। तो फिर क्या आत्मावलोकन नहीं किया जाना चाहिए? क्या आत्मवलोकन हमारे जीवन में परेशानी पैदा करने वाला हो जाता है? उपरोक्त विवेचन तो इधर ही ईशारा कर रहा है। लेकिन वास्तव में तो आत्मावलोकन एक गुण है। श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करने वाला गुण है। अपने आप में निखार लाने में सहायक रहने वाला गुण है। उत्तरोत्तर प्रगति की ओर प्रबलता से प्रवाहित करने वाला गुण है लेकिन कब, जब वह आत्महीनता से मुक्त हो।

ऐसा ही आत्महीनता मुक्त आत्मावलोकन करना सिखाता है श्री क्षत्रिय युवक संघ। यहां केवल धिक्कार नहीं है, केवल उलाहना नहीं है, आपको छोटा सिद्ध कर स्वयं को बड़ा सिद्ध करने का नकारात्मक प्रयास भी नहीं है। यहां का हर एक प्रयास जहां इस मार्ग पर चलने वालों को उनकी विशिष्टताओं से रू-ब-रू करवाता है वहीं निरन्तर उनकी कमियों की ओर भी ईशारा करता है। जो व्यक्ति एक बार इस प्रक्रिया का मन से हिस्सा बन जाता है वह इस प्रक्रिया को स्वयं के भीतर भी अवतरित कर लेता है। जब एक बार इस प्रक्रिया का अंतर में बीजारोपण हो जाता है तो व्यक्ति अपने आपको देखना शुरू करता है। लेकिन यह शुरुआत उसे आत्महीनता के गर्त में नहीं ले जाती बल्कि साथ ही साथ यह समझाती है कि यह अधुरापन मेरा नहीं है बल्कि मेरे से चिपक गया है और यह चिपकना कोई साधारण चिपकना नहीं है बल्कि मेरे अहंकार के साथ मिलकर यह विजातीय पदार्थ मेरा अपना सा हो गया है और केवल मेरे साथ ही ऐसा नहीं है बल्कि मेरे जैसे अनेक लोगों के साथ ऐसा ही है। जो आज मेरे आगे खड़े हैं वे भी कल मेरे जैसे ही थे और वे इसी मार्ग पर चलकर आज आगे आए हैं इसलिए मुझे हीन भाव से ग्रसित नहीं होना है बल्कि मार्ग पर बने रहना है और मेरा इस मार्ग पर बने रहना ही मुझे इस मेल से पृथक कर देगा। बस मुझे निरन्तर अपने आपको देखना है, अपने आपको तोलना है और जो कुछ अवांछित है उसे मार्ग के निर्देशानुसार छोड़ने के लिए तत्पर रहना है। इसलिए आत्महीनता की नहीं बल्कि इस तत्परता की आवश्यकता है। यह आत्महीनता मुक्त आत्मावलोकन है और इसी आत्मावलोकन को प्रशस्त करता है श्री क्षत्रिय युवक संघ। श्री क्षत्रिय युवक संघ केवल व्यक्तिगत आत्मावलोकन ही नहीं करवाता बल्कि सामाजिक रूप से सम्पूर्ण समाज को भी ऐसा ही आत्मालोकन करवाने का मार्ग है। इसलिए यहां इतिहास का अध्ययन करते समय भी केवल विशेषताओं का अध्ययन नहीं किया जाता और ना ही केवल भूलों का अध्ययन किया जाता है बल्कि विशेषताओं के होते हुए हुई भूलों का अध्ययन किया जाता है। विशेषताओं के बल पर ऊंचाइयों को छूने के कारनामों का भी अध्ययन किया जाता है तो छोटी-छोटी भूलों के कारण उन ऊंचाइयों से लुढ़कने का भी अध्ययन किया जाता है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ के लिए यह समाज केवल एक समूह मात्र नहीं बल्कि जीवंत अस्तित्व रखने वाला समूह शरीर है जिसकी सेवा व अर्चना पूज्य भाव से कर संघ स्वयं को कृतार्थ महसूस करता है। यही कृतार्थता संघ को इस समाज का सेवक बनाती है और इसी सेवा के बल पर संघ व्यष्टि, समाष्टि और परमेष्टि तक की यात्रा के पथ पर अपने सम्पर्क में आने वाले पथिक को आरूढ़ करता है। अन्तरावलोकन भी करवाता है और आत्महीनता भी नहीं आने देता।

खरी-खरी

'मैं एक गरीब बाप का बेटा'

मैं एक गरीब बाप का बेटा हूं, या मेरी मां लोगों के घर बर्तन मांजती थी या मेरे माता-पिता अनपढ़ थे ऐसे वक्तव्य हमें आजकल अखबारों में बहुतायत में पढ़ने को मिलते हैं। ये वक्तव्य उन लोगों के होते हैं जो आज संसार की नजर में कुछ बन गए हैं। उन लोगों के साक्षात्कार जब अखबारों में छपते हैं या इलेक्ट्रोनिक मीडिया से प्रसारित होते हैं या फिर सोशल मीडिया में वायरल होते हैं तो इसी बात पर विशेष जोर होता है कि उनके पिता गरीब थे या माता मजदूर थी। हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा अपनी माता के लोगों के घर बर्तन मांजने की बात के बाद तो यह बात आम सी हो गई है। हर तथाकथित सफल आदमी अपनी सफलता की कहानी की शुरुआत अपने माता-पिता की कमजोरी से करता है। वह बड़े गर्व से कहता है कि मेरे माता-पिता कमजोर थे। वह अपने बचपन की विपरीत परिस्थितियों का जिक्र करता है। वह अपनी समझ के अनुसार सही ही करता होगा लेकिन उसके इस वक्तव्य में उसका अपना अहंकार छिपा होता है। विपरीत परिस्थितियों से जूझकर सफल होने की प्रेरणादायी कहानी बताते बताते अनायास ही वह अपने माता-पिता को अपने से छोटा घोषित कर देता है। अपने आपको बड़ा सिद्ध करने का एक दौर देश में चल रहा है और उस दौर में व्यक्ति इतना अधिक स्वकेन्द्रित होता जा रहा है कि अपनी सफलता को बड़ी सिद्ध करने के लिए वह किसी को भी छोटा सिद्ध कर देता है। वह ऐसा करते समय यह सोचता भी नहीं कि वह ऐसा कर रहा है, सोचने से पहले उसमें इतनी समझ भी नहीं होती कि उसका ऐसा करने से कुछ गलत भी हो रहा है। यह उन लोगों की स्थिति है जो अपने आपको सफल मान रहे हैं और संसार जिन्हें सफल मान रहा है। अपनी सफलता से बड़े बने वे लोग सबसे पहले यदि किसी को छोटा बनाते हैं तो वे उनके माता-पिता होते हैं जहां वे यह अहसास करवाते हैं कि उनके माता-पिता सामान्य मजदूर थे, या सामान्य किसान थे, या ठेला लगाते थे या फिर बहुत गरीब थे। अखबार वाले भी बहुत आकर्षक शीर्षक के साथ छापते है कि मजदूर का बेटा बना आई.ए.एस. या फिर लिखते हैं कि ठेला लगाने वाले के बेटे ने किया टॉप। इस प्रकार के शीर्षक के पीछे भावना गलत या माता-पिता को छोटा करने की नहीं होती होगी बल्कि प्रेरणा लेने की ही होती है लेकिन अनजाने में होता यही है कि वह मजदूर बाप या ठेले वाले बाप को छोटा सिद्ध कर देते हैं। आप कह सकते हैं कि यह एक नकारात्मक सोच है और जब भावना गलत नहीं है तो आप ऐसा क्यों मानते हैं? माना कि भावना गलत नहीं होती लेकिन ऐसा कहने वाला अनजाने में ही सही कहीं न कहीं अपने अहंकार को तुष्ट कर रहा होता है। वह यह बता रहा होता है कि उसने बहुत बड़ा काम कर लिया है या वह बहुत बड़ा बन गया है। इस बड़े बनने के अहसास में वह इतना डूबा हुआ होता है कि उसे अहसास ही नहीं होता कि वह पहली तुलना अपने मूल से ही कर रहा होता है, अपने ही परिवार से कर रहा होता है, अपने ही माता-पिता से कर रहा होता है। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह भी ऐसे ही गरीब परिवार से थे। विभाजन की त्रासदी को झेलकर भी अपनी योग्यता के बल पर वे राष्ट्रीय परिदृश्य पर स्थापित हुए। उनका उभार उनकी राजनीतिक कलाबाजियों के कारण नहीं बल्कि विशुद्ध रूप से उनकी योग्यता के कारण हुआ। हालांकि कालांतर में राजनीति के शिकार होने के कारण उन्हें बदनाम होना पड़ा या यूपीए-2 के दौरान उनकी छवि एक मजबूर इंसान के रूप में स्थापित हुई लेकिन फिर भी इस बात में तिल भर भी शंका नहीं है कि उन्होंने अपनी व्यक्तिगत योग्यता का डंका संसार भर में बजाया लेकिन कभी उनको यह कहते हुए नहीं सुना कि उनके माता-पिता गरीब थे। वे चिमनी की रोशनी में पढ़कर संसार के अग्रणी अर्थशास्त्री बने। यही बड़प्पन है। बड़प्पन कभी किसी को छोटा सिद्ध करने से नहीं सिद्ध होता बल्कि अपने आपको बड़ा बनाने से होता है। ऐसे में जो बड़ा बनते ही सबसे पहले अपने मां-बाप को छोटा सिद्ध करता है या जो व्यवस्था उन्हें छोटा सिद्ध करती है वह बड़ा जीवन भर लोगों को छोटा सिद्ध कर ही अपने अहंकार की तुष्टि करता रहेगा।

सती सूरमा स्मारक समिति का गठन

चुरू जिले के सरदारशहर के निकट आसलसर गांव में 25 फरवरी को श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें सती शूरमा स्मारक समिति का गठन किया गया। सांघिक परंपरानुसार प्रारंभ हुई बैठक का संचालन करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक गोविन्दसिंह आसलसर ने बाला सतीजी से प्रेरणा लेकर आसलसर में हुए सतीजी एवं अन्य जुझारों की जानकारी दी, उनका जीवन परिचय प्रस्तुत किया। साथ ही सती शूरमाओं की देवलियों व मंदिर का पुनर्निमाण करवाने हेतु सती सूरमा स्मारक समिति का गठन किया गया। इस समिति को शमसान घाट के रखरखाव एवं विकास का भी दायित्व सौंपा गया। समिति में अध्यक्ष गोपालसिंह आसलसर, उपाध्यक्ष उम्मेदसिंह आसलसर, सचिव गोविन्दसिंह आसलसर व कोषाध्यक्ष विक्रमसिंह आसलसर सहित 11 सदस्यों का सर्वसम्मति से मनोनयन किया गया।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	11 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर (बालक)	18.05.2020 से 28.05.2020 तक	**श्री कच्छ कड़वा पाटीदार विद्याधाम, पिराना, अहमदाबाद (गुजरात)** (सरदार पटेल रिंग रोड से 2 किमी अंदर)
2.	7 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर (बालिका)	18.05.2020 से 24.05.2020 तक	**प्राथमिक शाला, काणेटी, अहमदाबाद (गुजरात)**

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

विशिष्ट... (पृष्ठ एक का शेष)

उन्होंने कहा कि जिस प्रकार शरीर के भीतर कोई रोग होने पर स्वादिष्ट भोजन सामने होने पर भी ग्रहण करने की इच्छा नहीं होती है वैसे ही हृदय में अपवित्रता होने से व्यक्ति अपने सामने उपस्थित श्रेष्ठता को भी आत्मसात नहीं कर पाता। श्री क्षत्रिय युवक संघ को भी कोई आत्मसात नहीं कर पा रहा है तो उसका कारण उसके भीतर अहंकार, स्वार्थ, मोह, कुंठा जैसे रोगों का होना ही है। कार्ययोजना बैठक के दौरान मध्य गुजरात, उत्तर गुजरात तथा गोहिलवाड़ संभाग के विभिन्न प्रान्तों से संभाग प्रमुख, प्रांतप्रमुख तथा अन्य सहयोगी उपस्थित रहे। केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची द्वारा आगामी मई माह में पिराणा (अहमदाबाद) में आयोजित होने वाले बालकों के 11 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर तथा काणेटी (अहमदाबाद) में आयोजित होने वाले बालिकाओं के सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के आयोजन के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा के पश्चात विभिन्न सहयोगियों को दायित्व सौंपे गए। साथ ही श्रद्धेय आयुवानसिंह जी हुडील की स्मृति में मनाए जा रहे जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में चर्चा की गई। अजीतसिंह जी ने वर्ष 2024 में पूज्य श्री तनसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष को मनाने की तैयारी में भी अभी से जुट जाने का निर्देश दिया। इसके अतिरिक्त बैठक के दौरान पथप्रेरक-संघशक्ति की सदस्यता बढ़ाने हेतु अभियान चलाने पर तथा संघ साहित्य की पुस्तकों के गुजराती अनुवाद के कार्य के संबंध में भी चर्चा हुई।

फतेहसिंह जी थोब को श्रद्धांजलि

चौपासनी स्कूल की भूतपूर्व छात्र समिति की ओर से 12 मार्च को शिक्षक कॉलोनी जोधपुर में स्व. फतेहसिंह जी थोब की श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव, प्रेमसिंह रणधा, चन्द्रवीरसिंह देणोक, चक्रवर्ती सिंह जोजावर, हनुमानसिंह खांगटा, रामसिंह आमला, नाथूसिंह खंगार सहित अनेक भूतपूर्व छात्र व शिक्षक कॉलोनी जोधपुर में निवासरत समाजबंधु उपस्थित रहे। इस अवसर पर वक्ताओं ने आदरणीय माट्साब के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर अपने विचार प्रकट किए।

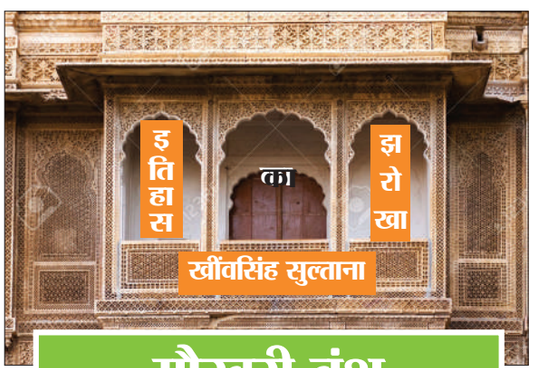

मौखरी वंश

गुप्तों के पतन और वर्धन वंश के उदय के मध्य उत्तर भारत में कुछ समय के लिए अलग-अलग वंशों का विवरण मिलता है जिनमें से एक प्रमुख वंश था 'मौखरी वंश।' मौखरी वंश के बारे में साहित्य एवं पुरातत्व दोनों से जानकारी मिलती है इस वंश का संबंध इनके कुछ अभिलेखों के अनुसार मद्रराज 'अश्वपति' से था। प्राचीन भारत में कई मौखरी कुल थे जिनमें से कुछ में गणतंत्रात्मक व्यवस्था थी तो कुछ में राजतंत्रात्मक। मौर्योत्तर काल में इनकी दो प्रमुख शाखाएं एक दक्षिणी बिहार में तथा दूसरी गंगा-यमुना दोआव (राजधानी कन्नौज) में शासन करती थी परन्तु गुप्तों की साम्राज्यवादी नीति ने इनकी स्वतंत्रता को समाप्त कर दिया और इन्हें गुप्तों का साम्राज्य बना दिया पर गुप्तों के अवसान काल में इन्होंने पुनः अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। जिनमें से गंगा-यमुना दोआब में शासक करने वाली शाखा का भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।

कन्नौज के मौखरियों का इतिहास में प्रथम उल्लेख महाराज हरिवर्मा से मिलता है जिसका राज्य केवल कन्नौज के आसपास ही था। हरिवर्मा का पौत्र ईश्वर वर्मा प्रथम ऐसा मौखरी शासक था जिसने अपने राज्य का विस्तार कर कुल के गौरव को बढ़ाया। मौखरियों का सबसे महत्वपूर्ण शासक 'ईशान वर्मा' था, जिसके विभिन्न स्थानों से प्राप्त अभिलेखों से उसकी उपलब्धियों का वर्णन मिलता है। ईशान वर्मा के शासन काल का छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में वर्णन मिलता है। वह एक वीर यौद्धा और विजेता था। हरहा अभिलेख से उसकी अनेक विजयों की जानकारी मिलती है जिसमें पूर्व दक्खन का विष्णु कुण्डिवंश, विदर्भ और चेदि के आसपास के शौलिक, हूणों पर विजय महत्वपूर्ण थी। इन विजयों के फलस्वरूप ईशान वर्मा की शक्ति व प्रतिष्ठा में अत्यधिक वृद्धि हुई जिसके कारण ईशान वर्मा का संघर्ष उत्तर गुप्त शासकों के साथ हुआ। उत्तर गुप्त शासक कुमार गुप्त के साथ हुए युद्ध में ईशान वर्मा को पराजय का सामना करना पड़ा। ईशान वर्मा वैदिक धर्म का पोषक था, उसने वैदिक धर्म को बढ़ावा दिया। ईशान वर्मा के बाद उसका सुयोग्य पुत्र सर्व वर्मा मौखरी साम्राज्य का शासक बना। वह अपने पिता की भांति एक शक्तिशाली शासक था। अफसढ अभिलेख के अनुसार उसने उत्तर गुप्त शासक दामोदर गुप्त को परास्त कर अपने पिता की पराजय का प्रतिशोध लिया। मगध को जीतकर उसने उसे मौखरी साम्राज्य में मिला लिया। सर्व वर्मा के बाद उसका पुत्र अवन्ति वर्मा शासक बना। हर्षचरित में उसकी अत्यन्त प्रशंसा की गई है। उसने हूणों को परास्त किया, वह एक शक्तिशाली शासक था जिसका राज्य कन्नौज, पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के एक विशाल भाग पर था। अवन्ति वर्मा का पुत्र ग्रह वर्मा इस वंश का अंतिम महत्वपूर्ण शासक था जिसका विवाह प्रभाकर वर्द्धन की पुत्री व हर्ष की बहिन राज्य श्री के साथ हुआ था। उसका वध मालवा के शासक देवगुप्त ने धोखे से कर दिया इसके उपरान्त घटे घटना क्रम में मौखरी साम्राज्य हर्ष के साम्राज्य में विलीन हो गया। मौखरी वंश के इन प्रतापी शासकों ने गुप्तवंश के बाद की राजनीतिक शून्यता को भरने का एक सफल प्रयास किया और भारतीय इतिहास में अपना स्थान बनाया। **(क्रमशः)**

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

(पृष्ठ एक का शेष)

संघ सिखाता...

संघ अपने पुत्रों और पुत्रियों से कहता है कि तुमने आकर मेरा खेड़ा बसाया है। आज ये खेड़ा पुनः उजड़ रहा है। यहाँ फाग खेलने बहुत लोग आये और चले गए, आगे भी आएंगे और जाएंगे। स्वागत करते करते तिलक करने वाली उंगली घिस गई। कभी किसी का, कभी किसी का स्वागत करता रहा। विदाई का तिलक लगाते-लगाते भी उंगली का रंग बदलने लगा। संघ हमसे कहता है तुम आते हो तो बहार आती है, तुम नहीं आते हो तो बहार कुछ कम लगती है लेकिन ये खेड़ा तो हरा भरा ही रहता है। कबीर जी ने कहा है जब हमने जन्म लिया तो संसार हंसा और हम रोयें। किन्तु जीवन में ऐसे कर्म करें कि जाने के समय हम हंसे और जग रोये। रोते तो हम सभी है। कोई जाता है तो हम रोते हैं, दो चार दिन रोते हैं किंतु ऐसा कर्म जिसका प्रभाव सदियों तक रहे वो कर्म करने के लिए आप शिविर में आए हैं। परन्तु बाहर जाने के बाद दुनिया का प्रभाव इतना प्रचंड हो जाता है कि आपकी चूल-चूल हिल जाती है, संघ पीछे छूट जाता है। संघ आपको मजबूत बनने के लिए कहता है। कल्पना करें कि आपकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान आकर आपको कहें कि आपको क्या चाहिए तो उस समय आपके पास मांगने के लिए क्या हो? इसकी तैयारी संघ करवाता है। हम क्या चाहते हैं यह हमें पता नहीं है। संघ हमें सिखाता है कि हमें क्या चाहना चाहिए। संघ आपको बताता है कि यदि भगवान से कुछ मांगना पड़े तो क्या मांगे। सावधान रहना कि कोई छोटी मोटी चीज न मांग लेना। संघ की साधना हमें उच्चतर स्तर पर ले जाने के लिए है लेकिन हम सभी की श्रेणी अलग-अलग है इसीलिए साधना का स्वरूप बड़ा जटिल है।

आप सभी अलग अलग स्थानों से, अलग-अलग परिवेश से आए हैं पर मुझे आपमें एकता दिखाई पड़ती है। वह तात्विक एकता है। यह तात्विक एकता ही हमें एक कर सकती है, अन्य कोई तरीका नहीं है। इस एकता को जानने के लिए ही यह साधना है परंतु इसमें निरंतर गतिशील रहना आवश्यक है। मैं आपसे कहता हूँ कि चलते रहो नहीं तो सड़ जाओगे। निरंतर विकास द्वारा हमारा वह तत्व प्रकट होना चाहिए।

यहां से आप जाएंगे तो अपने आपको संसार से अलग मत करना। श्रेष्ठता का अहंकार मत लाना। ईश्वर की कृपा है कि हम इस मार्ग पर आए हैं। ईश्वर के संकेतों को जानने का, समझने का प्रयास करें। हमारे लिए जितनी आवश्यकता है उसकी व्यवस्था ईश्वर करता है। पर इसको स्थायी मानने से जड़ता आती है। जड़ता आने से जागृति समाप्त हो जाती है। संघ चाहता है कि आप जड़ न बनें। जैसे तैसे आपकी गति बनी रहे। तनसिंह जी कहते थे कि हर व्यक्ति की आत्यंतिक उन्नति निश्चित है परंतु जो इसे समझकर इस दिशा में प्रयत्नशील हो जाता है वह शीघ्र मुक्ति प्राप्त प्राप्त कर लेता है। यदि संघ में आकर आपको यह अनुभव हो कि भगवान हमारे साथ खेल रहे हैं तो आप कभी दुःखी नहीं होंगें। भगवान की क्रीड़ाओं को हम समझते नहीं हैं इसीलिए दुःखी हैं। भगवान का संग ही सत्संग है। भगवान हम कहाँ से लायें? जो हमारे जीवन में वर्तमान में हमको मार्ग दिखाता है वही हमारा भगवान है। संघ ही हमारा भगवान है। वह हमारे विकास की व्यवस्था करता है। हमारा स्वभाव बंधनों में रहने का नहीं है पर संघ हमें श्रेष्ठता के बंधनों को स्वीकार करना सिखाता है।

संघ संयम का मार्ग बताता है। संयम से ही सभी साधनाएं प्रारम्भ होती हैं और संयम में ही सभी साधनाएं समाप्त होती हैं। कष्टपूर्ण मार्ग है संघ क्योंकि यह उर्ध्वगामिनी साधना है। संघ हमें जड़ता से निकालकर भगवान की ओर ले जाता है। ऐसी सुख और शांति जो कभी जाए नहीं उसे प्रदान करने की व्यवस्था है संघ। आज इस शिविर में विदा के समय संघ यही कह सकता है कि यह अंतिम विदाई नहीं है। जो हमने पाया है उसे अंकुरित नहीं किया, आगे नहीं बढ़ाया तो आपके लिए और संघ के लिए यह पीड़ादायक होगा।

आप संघ को भूल जाएं तो भी संघ आपको नहीं भूलता। आप न भी आएं तो भी आपकी स्मृति संघ को आती रहेगी। आपके जीवन में भी यह बात आ जाय कि आप न भी आ सकें तो भी संघ को भूलें तो नहीं। संघ की चाह सदैव यही है कि आपका कल्याण हो। कल्याण का मार्ग संघ प्रशस्त करता है पर उस मार्ग को जानने मात्र से काम नहीं चलेगा, उस मार्ग पर चलना भी पड़ेगा। आप सभी उस मार्ग पर चल पड़े और चलते रहें, यही संघ का विदाई की इस वेला में आपके लिए संदेश है।

ईश्वर से एकाकार होने की बात करता है भारत

हमारा देश धर्म प्रधान देश है। धर्म को हम सभी बहुत महत्व देते हैं। इस बात पर हम गर्व भी करते हैं परंतु यदि गहराई से विचार करें तो पूरा संसार ही धर्म को मानने वाला है। हमारी संस्कृति, मान्यताएं, परंपराएं सबसे पुरानी हैं। वेद, उपनिषद आदि सबसे प्राचीन ग्रंथ है। जिस व्यवस्थित तरीके से धर्म व संस्कृति का विकास भारत में हुआ, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं हुआ यद्यपि दार्शनिक, चिंतक आदि सभी देशों में हुए। इस संसार का पोषण करने वाली सत्ता का नाम परमेश्वर, भगवान, ईश्वर आदि है। ये लगभग समानार्थी शब्द हैं। भगवान सुख और शांति के भण्डार को कहते हैं। सबमें जो व्याप्त है उसे ईश्वर कहते हैं - ईशावस्यमिदं सर्वं - यह एकत्व का बोध कराता है। परमात्मा का अर्थ है सबकी आत्मा। जो सबमें रहते हुए भी सबसे परे है वह है परमात्मा।

फिर हमने, हमारे पूर्वजों ने त्रिदेवों की कल्पना की। सृष्टि का निर्माण करने वाले देव को ब्रह्मा, सृष्टि का पालन करने वाले देव को विष्णु तथा सृष्टि का नियमन करने वाले देव को शिव कहा। जिस शक्ति से यह तीनों कार्य करते हैं उन्हें तीन देवियां माना - सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा। इनके भिन्न भिन्न रूपों की हमने कल्पना की परन्तु ऐसी वास्तव में कोई सत्ता नहीं है अपितु यह ईश्वरीय शक्तियों के गुणों की, कार्यों की बात है। जिसको जो रूप सुहाता है उस रूप की उपासना करता है। यह भारत की कल्पना है परन्तु अन्य देशों में भी देवी-देवताओं की मान्यताएं रही हैं। सम्पूर्ण संसार में आध्यात्मिक जानकारी का अगुआ भारत ही रहा इसीलिए भारत को विश्वगुरु की मान्यता मिली।

उपास्य और उपासक, सेव्य और सेवक, पूज्य और पुजारी - इनके आपसी सम्बन्ध की जैसी मान्यता भारत में हैं वैसी अन्य किसी देश में नहीं रही। भारतीय दर्शन की यह विशेषता है कि वह ईश्वर से एकाकार होने की बात करता है। ईसाई कहते हैं कि हम भगवान के बेटे हैं, मोहम्मद साहब स्वयं को अल्लाह का दूत बताते हैं पर भारत कहता है कि भगवान और हम भिन्न नहीं हैं। जो वह है वही मैं हूँ। मैं ही आत्मा हूँ, मैं ही परमात्मा हूँ। यह अन्तिम सत्य है पर उस सत्य तक पहुंचने के लिए साधना करनी पड़ती है। इस साधना को लेकर भी भारतवर्ष में अनेकों विचारधाराएं विकसित हुई हैं। तनसिंह जी की, संघ की विचारधारा यह है कि भगवान और मेरे बीच में संसार है, जिसे हमने भवसागर कहा है। भव का अर्थ है - जो है। इस सागर को हमें पार करना है। हम यहां रहने नहीं आएं हैं यह सदैव याद रखना है।

उपरोक्त बातें माननीय संघप्रमुख श्री ने बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में आयोजित दम्पती शिविर के दौरान होली के अवसर पर उपस्थित दंपतियों से कही।

प्रसंगवश

विगत दिनों करणु प्रकरण के उपरान्त जिस प्रकार घटना भक्षी समाजसेवक एवं राजनेता सक्रिय हुए वह सभी समाजों के लिए चिंता का विषय है। वह घटना आपराधिक थी एवं एक अपराध की सभी को आलोचना करनी चाहिए और सभी ने की भी लेकिन जिस प्रकार आपराधिक घटनाओं को आधार बनाकर समाजों को लड़ाने के लिए प्रेरित किया गया, खुले आह्वान किए गए वह ऐसी प्रवृतियों का शमन करने की नहीं बल्कि पोषित करने की गतिविधियां हैं। दुर्भाग्य से सभी समाजों में ऐसे अनेक घटनाभक्षी समाज सेवक तैयार हो रहे हैं जिनके लिए समाज में घटने वाली ऐसी घटनाएं भोजन उपलब्ध करवानी हैं। उनके पास किसी भी प्रकार की रचनात्मकता का अभाव होता है और ऐसे में यदि लंबे समय तक ऐसी कोई आपराधिक घटना न हो जो उनके समाज को अन्य समाज के विरुद्ध खड़ा होने का आधार बने तो उनका अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। ऐसे में समाजों के बीच सद्भाव सदैव खतरे में पड़ा रहता है। क्योंकि ऐसा कभी नहीं होना कि किसी भी समाज में कोई अपराध कभी नहीं हो। इसलिए इन घटनाभक्षी समाजसेवकों से सभी समाजों को बचाना नितांत आवश्यक है। इसके लिए सद्भाव पैदा करने को प्रयत्नशील लोगों को अपनी क्रियाशीलता बढ़ानी होगी एवं साथ ही उसकी गति भी बढ़ानी पड़ेगी।

पीड़ित को नौकरी देने या मुआवजा देने की घोषणा करना घाव पर मरहम पट्टी मात्र है और दुर्भाग्य से हमारी वर्तमान व्यवस्था या तो मरहम पट्टी तक सीमित है या फिर नकारात्मक साधनों द्वारा समस्या को मिटाने के नाम पर बढ़ा रही है।

प्रसंगवश चर्चा करें तो दिल्ली के सांप्रदायिक दंगे भी इसी प्रकार की नकारात्मकता का परिणाम है। जब एक समूह के विकास के नाम पर दूसरे को दबाने का प्रयास किया जाएगा तो संतुलन के अभाव में विस्फोट स्वाभाविक है और दुर्भाग्य से देश को संचालित करने वाली राजनीति ऐसे विस्फोट को उर्वरा मानकर उसमें अपनी राजनीतिक फसल लहलहाती है, जब तक ऐसी कुत्सित सोच की राजनीति विद्यमान रहेगी तब तक यह बंटवारा और विखंडन जारी रहेगा, यह बात हमारा निकटवर्ती इतिहास चीख-चीख कर कह रहा है। तीसरा प्रसंग देश की एक अग्रणी बैंक का असफल होना है। यह देश की वर्तमान आर्थिक व्यवस्था पर गंभीर प्रश्न चिह्न है। वर्तमान के आर्थिक परिदृश्य में बैंकिंग प्रणाली सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है और यदि इस घटक पर प्रश्न चिह्न लगता है तो यह संपूर्ण आर्थिक परिदृश्य पर प्रश्न चिह्न है। देश के मेहनतकश मध्यम वर्ग की छोटी-छोटी बचतों को सरकार के सहायक उद्योगपतियों को सौंप कर उन्हें खुला खेलने को छोड़ने वाली व्यवस्था एक तरह से व्यवस्था के नाम पर धोखा है। यह किसी एक सरकार की विफलता नहीं बल्कि सम्पूर्ण व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न है। एक ओर तो सरकारें जनता को लगभग मजबूरी के स्तर पर बैंकिंग प्रणाली के माध्यम से काम करने को प्रेरित कर रही हैं और दूसरी तरफ सरकार की प्रेरणा स्वरूप दबाव के कारण बैंकों में जमा हुआ पैसा खुले हाथों राजनेताओं और उद्योगपतियों के गठजोड़ के बीच निर्बाध रूप से विपरीत किया जा रहा है। इससे बड़ी बात यह है कि जिम्मेदार लोग इन सभी असफलताओं का जिम्मेदारी अपने से पूर्ववर्ती पर डाल देते हैं। समझ में यह बात नहीं आती की पांच वर्ष के लिए सत्ता सौंपे जाने की व्यवस्था का पालन करने वाली राजनीतिक पार्टियां 6 वर्ष तक सत्ता में रहने के बावजूद अपनी असफलताओं का ठीकरा अपने पूर्ववर्तियों पर फोड़कर क्या उसी व्यवस्था को अस्वीकार नहीं कर रही जिसके बल पर वे सत्ता में पहुंचे हैं। खैर में सब बातें अच्छे लोगों द्वारा जगह खाली करने के कारण पनपती है और जब तक अच्छे लोग घर बैठे रहेंगे तब तक पनपती रहेंगी।

(पृष्ठ एक का शेष)

अंकुरण...

स्वयंसेवकों के अतिरिक्त अन्य दम्पती भी आना शुरू हुए और ऐसा लगने लगा कि परिवारों में संघ की परस्पर जानकारी के कारण सौहार्द बढ़ा है। पुरुष वर्ग के शिविर लम्बे समय से लगते रहे हैं। उस समय ऐसी कोई कल्पना नहीं थी कि महिलाओं के शिविर भी लगेंगे। परंतु आवश्यकताओं ने संघ को विवश किया। संघ का कार्य बढ़ने के साथ संघ के लोग पूरे समाज में अलग से चिह्नित होने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि संगठन तो हुआ परन्तु अन्यों से अलग होने के कारण दूसरों से घुलने मिलने में कठिनाई हुई। संघिष्ठ और नॉन संघिष्ठ का विभाजन रेखांकित होने लगा। कट्टरता के परिणामस्वरूप जड़ता आती है, हम पर भी जड़ता का प्रभाव हुआ। जड़ता से अहंकार आया। उस अहंकार से अन्यों में हमारे प्रति ईर्ष्या जागी। यहां तक कि हम परिवार में भी अलग थलग हो गए। समय के साथ इस परिस्थिति में परिवर्तन आया। तनसिंह जी चाहते थे कि सभी लोग संस्कारित हों। हमारा कर्म, मार्ग, जानकारी और अनुभव श्रेष्ठ हों। वह समय संघ का बाल्यकाल था। तनसिंह जी ने अपनी तपस्या से उस बचपने को एक रास्ते पर ढाला। संसार में सदा से हमारे पूर्वजों ने त्याग का मार्ग चुना। मंदिरों की, धरती की, स्त्रियों की रक्षा में अपना सर्वस्व अर्पण करके क्षात्र परंपरा को प्रतिष्ठित किया। किन्तु पिछले लगभग एक हजार वर्ष में हम खण्ड-खण्ड हो गए। न हम देश को बचा पाए और न अपने संस्कारों को। उसी दर्द का परिणाम श्री क्षत्रिय युवक संघ है। हमने सब कुछ खो दिया पर हमारी हेकड़ी नहीं गई, हमारा अहंकार नहीं गया। इस बात को समझकर तनसिंह जी शिक्षण दे रहे थे। उनके प्रयत्नों में कोई कमी नहीं थी परन्तु हजारों वर्षों के पतन ने राजपूत जाति को तोड़ दिया था। व्यक्ति जितना ऊपर उठता है, वही विकास है। विकास की गति ऊर्ध्व होती है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार आपने यज्ञ किया तब अग्नि की लौ ऊपर उठ रही थी। आपने देखा कि यज्ञ की अग्नि को भी जलने के लिए निरंतर समिधा रूपी ईंधन की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार राजपूत कौम की ज्योति को जलाए रखने के लिए भी त्याग रूपी ईंधन की आवश्यकता है। तनसिंह जी ने इस ज्योति को जाज्वल्यमान रखने का अमर प्रयत्न किया किन्तु हजार वर्ष की जड़ता टूटने में समय लगता है। प्रेरणा बनी रहने पर ही गति बनी रहती है अन्यथा जड़ता प्रभाव जमा लेती है। इस जड़ता के कारण ही आज इतनी दुर्गति दिखाई देती है। संघ को अभी हमने ठीक से समझा नहीं है और यदि समझा भी है तो केवल बुद्धि से समझा है। संघ का शिक्षण अभी पूर्णतः हमारे आचरण का अंग नहीं बन पाया है और जो ज्ञान आचरण में नहीं आता वह भार बन जाता है। कैम्प का अर्थ होता है प्रवास, डेरा अथवा अस्थायी निवास। यहां घर की भांति सुख-सुविधा नहीं मिलती। किन्तु मैं मान कर चलता हूँ कि आपकी ऐसी कोई शिकायत नहीं है। गहराई से देखें तो जीवन भी एक शिविर ही है क्योंकि यह भी स्थायी नहीं है। ईश्वर ने हमें यह संसार कुछ दिन रहने के लिए दिया है। परन्तु जहाँ हम रहते हैं, जिनके साथ हम रहते हैं उनसे हमारा मोह हो जाता है वह जड़ता को जन्म देता है। ऐसी जड़ता परिवार में रहते हुए भी आ जाती है। यह मेरा धन है, मेरी पत्नी है, मेरा पुत्र है, मेरा घर है यह मेरे का भाव ही मोह है, जड़ता है। शास्त्रों में इस संसार को भवसागर कहा है। इस सागर में जो रहना चाहेगा, वह डूब जाएगा। जो पार करना चाहेगा वह तर जाएगा। मनुष्य जन्म हमें इसीलिए मिला है कि हमें पुनः संसार में न आना पड़े। जड़ता में हम इस अवसर को खो देते हैं। संसार में उलझकर मनुष्य अपने लक्ष्य को भूल जाता है। मानव को इस लक्ष्य को स्मरण कराना और उसकी प्राप्ति के मार्ग पर आरूढ़ कराना ही संघ शिक्षण का हेतु है परन्तु यह शिक्षण एक माँ ही दे सकती है। जिस प्रकार मदालसा ने यह कहा था कि जो एक बार मेरी कोख में आ गया उसे यदि अन्य किसी की कोख से पुनः जन्म लेना पड़े तो मेरे जीवन को धिक्कार है। इसी भाव के साथ मदालसा ने अपने पुत्रों को धर्म की शिक्षा दे जीवन मुक्ति के मार्ग पर डाल दिया। ऐसी माताएं ही संस्कार दे सकती है जो स्वयं संस्कारित हो। परन्तु आजकल स्त्रियां भी स्वतंत्रता चाहती हैं संस्कार नहीं। संघ कार्य को देखकर महिलाओं ने कहा कि आप हमें साथ लिए बिना संस्कार निर्माण का कार्य कैसे करेंगे तब इस बात की सत्यता को अनुभव कर के महिलाओं का कार्य प्रारंभ हुआ। पति को पतित होने से बचाना पत्नी का दायित्व है और पत्नीको कोई कष्ट, शिकायत न हो यह पति का दायित्व है। दम्पती शिविर का हेतु यह है कि बच्चों को संस्कारित करने में माता-पिता का क्या योगदान हो सकता है यह बात माता पिता को समझाई जाय। नव-विवाहित दंपतियों को इस शिक्षण की, ज्ञान की आवश्यकता है कि क्या खाने से, क्या विचार करने से, क्या व्यवहार करने से आने वाली संतति पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह सब शिक्षण देने के लिए यह दम्पती शिविर है। यह चार दिन का जो अवसर हमें मिला है इसमें हमारे भीतर जो गंदगी है उसे यहीं डाल दें तथा संघ द्वारा दी जा रही श्रेष्ठता को धारण करके यहां से जाएं।

हनुमानगढ के बिरकाली में स्नेहमिलन

हनुमानगढ जिले में नोहर के निकट स्थित बिरकाली गांव में श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्नेहमिलन रखा गया। स्नेहमिलन में संघ के विचार दर्शन पर चर्चा कर संघ से जुड़ने व आत्मोत्थान द्वारा समाज व राष्ट्र की सेवा के निज निर्माण हेतु संघ की शिक्षा को जीवन व्यवहार में ढालने की बात की गई। संघशक्ति एवं पथप्रेरक के ग्राहक बनाए गए एवं यथार्थ गीता भेंट की गई। दीपेन्द्रसिंह, नवीनसिंह, कुलदीपसिंह बिरकाली आदि ने आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जीवराजसिंह भूकरका ने सहयोग किया।

कुम्भसिंह सोलंकियातला को पत्नी शोक

श्रीमती सुगनकंवर

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक कुम्भसिंह सोलंकियातला की धर्मपत्नी **श्रीमती सुगनकंवर** का देहावसान 4 मार्च को हो गया है। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने की परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

भंवरसिंह उदट को पत्नी शोक

श्रीमती कृष्णा कंवर राठौड़

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक भंवरसिंह उदट की धर्मपत्नी **श्रीमती कृष्णा कंवर राठौड़** का 8 मार्च को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने को परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय

पन्नेसिंह पोषाणा

के

भारतीय युवा कांग्रेस के

जालोर जिलाध्यक्ष

बनने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्ववल

भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु

ठा. प्रदीपसिंह सियाणा, कुं. महेंद्रसिंह चितलवाना, ठा. नरेन्द्रसिंह चुरा, कुं. गजेंद्रपाल सिंह पोषाणा, ठा. यशपालसिंह दांतिया, महावीर सिंह दांतिया, देवेंद्रसिंह पोषाणा, परबतसिंह पोषाणा, जितेंद्रसिंह अगवरी, गजेन्द्रसिंह वादनवाड़ी, उदयसिंह सायला, चक्रवर्ती सिंह देसू, अभिमन्यु सिंह देसू, डूंगरसिंह भवरानी, उदयसिंह सेदरिया बालोतान, कृष्णपाल सिंह राखी, खुशपालसिंह मोरुआ, कुलदीप सिंह बालदा, लक्ष्मण पाल सिंह बालदा, तेजपाल सिंह चुरा, पृथ्वीसिंह बडोड़ा गांव, नरेन्द्रसिंह गुड़ा बालोतान, सुरेन्द्रसिंह सिन्दरू, लक्ष्मणसिंह कोमता, महेन्द्रपाल सिंह पोषाणा, उदयसिंह पोषाणा, जसवंतसिंह पोषाणा, अरविंदसिंह पोषाणा, खुशवंत पाल सिंह पोषाणा, वीरपाल सिंह पावटा, दलपत सिंह पचानवा, विक्रमसिंह मालपुरा, वीरेन्द्रसिंह बेदाना, प्रदीपसिंह अगवरी, कल्याणसिंह मोरुआ, जसपालसिंह मोरुआ, हमीरसिंह सेदरिया बालोतान, वीर बहादुर सिंह असाडा, महिपालसिंह मोरुआ, परमवीर सिंह रामड़ावास, रघुवीर सिंह निम्बला, मानसिंह मंडलावत, कमलेश सिंह काम्बा, मनोहरसिंह चांदना, लक्ष्मणसिंह थूम्बा, गुलाबसिंह वेड़िया, श्रवणसिंह रणोदर, स्वरूपसिंह डडुसन, महिपालसिंह अचलपुर, कानसिंह परावा, रेवतसिंह राउता, भैरुपालसिंह दासपा, वीरेन्द्रसिंह भूतेल, सूरजपाल सिंह भूतेल, कुलदीपसिंह भूतेल, महावीर सिंह बोकड़ा, रूपसिंह उनड़ी, पुष्पेंद्रसिंह आसाणा, नरेन्द्रसिंह बोरवाड़ा, तेजसिंह बोरवाड़ा, करणसिंह मेड़तिया, राजूसिंह भीनमाल, देवीसिंह तैतरोल, कल्याणसिंह कीलवा, नेपालसिंह कीलवा, हीरसिंह कीलवा, सुमेरसिंह बावरला, पप्सा बावरला, लक्ष्मणसिंह होतीगांव, नगसिंह दांतिया, इन्द्रसिंह सायला, मुलेन्द्रसिंह मांडवला, लक्ष्मणसिंह सायला, नरेन्द्रसिंह भाटवास, पुरणसिंह देवड़ा, सज्जनसिंह पांचला, गणपतसिंह मालवाड़ा, महेंद्रसिंह चेकला, लक्ष्मणसिंह सायला, शैलेंद्रसिंह पूनावास , लोकेंद्रसिंह बोया, हुकुमसिंह काम्बा।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com , Web site:- www.shrikys.org